

अंजन घास के बीजोत्पादन की तकनीक (/articles/seed-production/1107-seed-production-in-anjan-grass.html)

Administrator 04 February 2020 Hits: 9

[Print](#)

[चारे के उत्पादन \(/component/tags/tag/चारे-के-उत्पादन.html\)](/component/tags/tag/चारे-के-उत्पादन.html)

[अंजन घास \(/component/tags/tag/अंजन-घास.html\)](/component/tags/tag/अंजन-घास.html)

[Pennisetumciliare \(L.\) \(/component/tags/tag/pennisetumciliare-l.html\)](/component/tags/tag/pennisetumciliare-l.html)

[Pennisetumcenchroides Rich. \(/component/tags/tag/pennisetumcenchroides-rich.html\)](/component/tags/tag/pennisetumcenchroides-rich.html)

[Buffelgrass \(/component/tags/tag/buffelgrass.html\)](/component/tags/tag/buffelgrass.html)

[African foxtail \(/component/tags/tag/african-foxtail.html\)](/component/tags/tag/african-foxtail.html)

[बफल घास \(/component/tags/tag/बफल-घास.html\)](/component/tags/tag/बफल-घास.html)

[बंच घास \(/component/tags/tag/बंच-घास.html\)](/component/tags/tag/बंच-घास.html)

[रहिजोमेटस बारामाही घास \(/component/tags/tag/रहिजोमेटस-बारामाही-घास.html\)](/component/tags/tag/रहिजोमेटस-बारामाही-घास.html)

Seed production technology of Anjangrass grass (*Cenchrusciliaris* L.)

अंजन घास, से. सिलिएरिस पोयेसी परिवार कि अत्यधिक पौष्टिक घास है, जिसे गर्म, शुष्क क्षेत्रों में चारागाह के लिए उत्कृष्ट माना जाता है। सूखे की अवधि के दौरान, यह घास कटिबन्धीय क्षेत्रों में स्वादिष्ट चारे के उत्पादन एवं अनियमित चराई के लिए मूल्यवान है।



अंजन घास की कुछ प्रजातियों की ऊपज बारीश के समय में भी इसे एक अच्छे चारे के रूप में प्रस्तुत करती है। यह माना जा रहा है कि अंजन की हरी घास या साइलेज मवेशियों में दूध की मात्रा तो बढ़ाती ही है साथ ही दूध की गुणवत्ता एवं चमक भी बढ़ाती है।

से. सिलिएरिस के लेक्टोगॉग होने के प्रमाण मिलते हैं जो कि मवेशियों में दूध निकलने की क्षमता को बढ़ाता है। अंजन घास कुछ प्रजातियां गुर्दे के दर्द, घावों आदि में लोक उपचार के रूप में विश्वविख्यात हैं (इयूक एंड वेन, 1981)।

अंजन घास की प्रति 100 ग्राम ताज़ी घास में, सूखे वजन के आधार पर, 11.0 ग्राम प्रोटीन, 2.6 ग्राम वसा, 73.2 ग्राम कुल कार्बोहाइड्रेट, 31.9 ग्राम फाइबर, और 13.2 ग्राम राख (गोहल, 1981) शामिल हैं एवं प्रति 100 ग्राम भूसे में सूखे वजन के आधार पर, 7.4 ग्राम प्रोटीन, 1.7 ग्राम वसा, 79.2 ग्राम कुल कार्बोहाइड्रेट, 35.2 ग्राम फाइबर और 11.7 ग्राम राख (गोहल, 1981) शामिल हैं।

विवरण

इसे बंच घास या रहिजोमेटस बारामाही घास भी कहते हैं क्योंकि यह भूतल पर चटाई या टसक जैसी संरचना बनाती है। कल्म सीधी या धरती पे झुकी होती है।

पौधे की लम्बाई प्रायः 15-25 सेमी होती है, जिसके ऊपर विकट क्राउन होता है। सीथ अरोमिल एवं लिग्यूल 0.5-1.3 सेमी लम्बी होती है। पत्तियों का रंग हरा या नीला-हरा होता है जो की 2.8-30 सेमी तक लम्बी एवं 2.2-8.5 सेमी तक चौड़ी हो सकती है।

इन्फ्लोरेस सघन, बेलनाकार एवं 2-12 सेमी तक लम्बा तथा 1-2.6 सेमी चौड़ा एवं बैंगनी रंग का होता है जिसे स्पाइक कहते हैं। रचिस फ्लेक्सिबल, स्केब्रस जबकि इंटर्नोड्स 0.8-2 मिमी लंबा (आमतौर पर लगभग 1 मिमी) होता है। कैरिओप्सिस सेमी लंबा एवं सेमी चौड़ा होता है जिसमें सेमी लम्बे एन्थर होते हैं। जड़ें घनी और लंबी होती हैं (रीड, 1976)।



परिस्थितिकी

बफल घास, 250 मिमी वार्षिक वर्षा, वार्षिक तापमान -12.5 से 27.8 डिग्री सेल्सियस एवं पीएच 5.5-8.2 (इयूक, 1978, 1979) के लिए सहनशील पायी जाती है। बफल घास समुद्र तल से 2000 मीटर की ऊंचाई तक, शुष्क रेतीले क्षेत्रों में, प्रतिवर्ष 250-750 मिमी वर्षा के साथ एवं सीमांत उर्वरता की उथली मिट्टी पर भी अच्छे से पनपती है। इस तरह की विशेषताएं इसकी उत्पादन सीमा का विस्तार करती हैं और चराई की दृष्टिकोण से इसका मूल्यवर्धन करती हैं।

मृदा प्रकार एवं तैयारी

सूखी और हल्की भूरी रेतीली मिट्टी इसके विकास के लिए अच्छी होती है। रेतीले मिट्टी की एक बार जुताई और एक लेवलिंग करके अच्छा बीजबेड बनाया जाना चाहिए।

बुवाई का समय

बीज व्यापक रूप से हवा से और जानवरों के फर से चिपककर फैलता है। बफलघास को पूरे वर्ष में स्थापित किया जा सकता है, हालांकि इसकी स्थापना की संभावना गीले मौसम की शुरुआत में बेहतर होती है

बीज दर

सामान्य बुवाई की दर 3-12 किग्रा / हेक्टेयर है; पंक्तियों में ड्रिलिंग के लिए 6-8 किग्रा / हेक्टेयर और प्रसारण के लिए 12 किग्रा / हेक्टेयर है। अधिकांश बीज 24 घंटे के भीतर अंकुरित हो जाते हैं। भारत में बफलघास को टफट स्प्लिट्स या राइजोम से वानस्पतिक रूप से प्रचारित किया जाता है।

बीज उपचार

हल्केहवा से उड़ने वाले बीजको ड्रिल या हाथ से बोना मुश्किल होते हैं। बीजों को गुटिका करण (पेलेटिंग) कर बोना बेहतर होता है। बेहतर अंकुरण के लिए बड़े बीजों का उपयोग करें, और 1-2 सेमी गहरा बोएं।

अनुशंसित खुराक

इसके उच्च उत्पादन के लिए 8-10 टन खाद, 20 किलोग्राम फॉस्फोरस खेत की तैयारी के दौरान मिश्रित करना चाहिए और बुवाई के 30-40 दिनों के बाद 20 किलोग्राम नाइट्रोजन/ हेक्टेयर की दर से उपयोग करना चाहिए।

खरपतवार प्रबंधन

प्रथम वर्ष में बीज उभरने के बाद एक या दो बार निराई गुड़ाई आवश्यक है। महत्वपूर्ण बीमारी और इसका नियंत्रण: स्मट प्रमुख रोग है और इसे रिडोमिल 1000 पीपीएम छिड़ककर नियंत्रित किया जा सकता है।

कीट प्रबंधन

घास होपर्स और लीफ होपर्स प्रमुख कीट हैं जो की 2% नीम बीज एक्सट्रेक्ट के स्प्रे से नियंत्रित किये जा सकते हैं।

कटाई का समय

स्थापना के बाद फसल के 10-15 सेमी की ऊंचाई पर आने के बाद एक कटाई की जानी चाहिए, लेकिन दूसरी वर्ष से बारिश के मात्रा के हिसाब से 2-3 बार कटाई की जा सकती है। प्रत्येक कटाई प्रत्येक वर्ष 10-20 टन/हेक्टेयर हरा चारा, 5- 6 टन/हेक्टेयर सूखा चारा और 500 Kg /हेक्टेयर बीज की औसत उपज देती है।

प्रक्षेत्र मानक

अलगाव कि दूरी (मी०)										निरीक्षण का समय
V		NV		NS		OT		W/D/I		BF
F	C	F	C	F	C	F	C	F	C	At FS
20	10	20	20	200	100	0.1	1.0	-	-	At Maturity

बीज मानक

कारक	प्रत्येक वर्ग के लिए मानक	
	Foundation	Certified
शुद्ध बीज (न्यूनतम)	80.0%	80.0%
निष्क्रियपदार्थ (अधिकतम)	20.0%	20.0%
अन्य फसल के बीज(अधिकतम)	20/kg	40/kg
खरपतवार के बीज(अधिकतम)	20/kg	40/kg
अंकुरण (न्यूनतम)	30%	30%
नमी (अधिकतम)	10.0%	10.0%
वाष्प-प्रूफ कंटेनरों के लिए(अधिकतम)	8.0%	8.0%

महत्वपूर्ण किस्मे

क्र. संख्या	किस्म	संस्थान	रिलीज़ वर्ष	उपज (चारा)(टन/हे.)
1	मरवाण अनजन(काजरी75)	CAZRI, Jodhpur	1985	9-10 t/ha
2	बुन्देल अनजन-1	IGFRI, Jhansi.	1989	35-40 t/ha
3	सीओ-1	TNAU, Coimbatore	1991	55 t/ha
4	बुन्देल अनजन-3 (IGFRI- 727):	IGFRI, Jhansi	2006	NA

Authors

अर्चना सन्याल, अंकिता त्रिवेदी, एवं रीना रानी

Scientist

ICAR-CENTRAL ARID ZONE RESEARCH INSTITUTE

Jodhpur, Rajasthan,

Email: archana0811bhu@gmail.com (mailto:archana0811bhu@gmail.com)

